RNI NO Title Code-UPHIN49594

हिन्दी दैनिक

नवयुग समाचार

बहराइच से प्रकाशित

एक सामाजिक दर्पण

वर्ष-3 अंक-196
बहराइच,शुक्रवार
26 जुलाई 2024
पृष्ठ-4 मूल्य 2.00

लखनऊ, उन्नाव, हरदोई, कानपुर, कन्नौज, फरुर्खाबाद, गोरखपुर, अंबेडकरनगर, म.प्र., बिहार में प्रसारित

यूपी रोडवेज में 10 हजार परिचालकों की भर्ती होगी

परिवहन मंत्री ने निर्देश दिए, बोले- बसों में सुविधाएं भी बढ़ेंगीं

लखनऊ। रोडवेज में परिचालकों की भर्ती नहीं होने से रोडवेज को नुकसान हो रहा है। यह बात परिवहन मंत्री दयाशंकर सिंह ने वढरफ्ळउ के समीक्षा बैठक में कही है। उन्होंने कहा कि परिचालकों की कमी से परिवहन निगम की बहुत सी बसें आफरूट हो रही है, इससे परिवहन निगम को आर्थिक नुकसान हो रहा है। साथ ही उन्होंने टेक्निकल स्टाफ की कमी को भी जल्द दूर करने के निर्देश भी दिये। इस दौरान अच्छी क्वालिटी की बसें लोगों को मुहैया कराने के निर्देश दिए। साथ ही वर्कशाप में बसों की अच्छी ढंग से मरम्मत करने को कहा है, जिससे छत टपकने की शिकायत ना

हो। उन्होंने कहा कि बसों की सीटें, शीशे बेहतर कंडीशन में हो। आनलाइन बुकिंग की व्यवस्था पर और बेहतर करने पर जोर दिया। साथ ही चालक/परिचालक वर्दी में हो, नेम प्लेट लगा होना चाहिए। बस स्टेशनों एवं डिपो पर एक हेल्पलाइन नम्बर की व्यवस्था की जाए, जिसपर यात्री किसी भी समय शिकायत दर्ज करा सकें। बैठक में बसों के लोड फैक्टर, फ्यूल एवरेज और आय की समीक्षा की गई। इसमें नोएडा, गाजियाबाद, चित्रकूट और बरेली के प्रबंधकों को बेहतर कार्य एवं प्रदर्शन के लिए बधाई दी। जबकि मेरठ, मुरादाबाद और वाराणसी के क्षेत्रीय प्रबंधकों को खराब प्रदर्शन करने पर चेतावनी दी। अलीगढ़, आजमगढ़, झांसी, मेरठ और देवीपाटन के क्षेत्रीय प्रबंधकों को उनके यहां अनुपयोगी बसों की संख्या ज्यादा पाये जाने पर चेतावनी दी।

उन्होंने खराब प्रदर्शन करने वाले अधिकारियों की जिम्मेदारी तय करने और उनके खिलाफ कार्यवाही करने के भी निर्देश दिए। हर दिन की शिकायत मुख्यालय को भेजने को कहा गया। परिवहन मंत्री ने उत्तराखंड और उप्र के निगम बसों के पार्किंग फीस में अंतर को समाप्त करने के निर्देश दिए। उत्तराखंड परिवहन निगम अपने यहां पार्किंग फीस 550 रुपए रखा है जबकि उप्र परिवहन निगम अपने यहां पार्किंग फीस 220 रुपए रखा है। इससे परिवहन निगम की बसों को आर्थिक नुकसान हो रहा है। साथ ही टिकट-डीजल चोरी को रोकने के लिए सख्त कदम उठाने के निर्देश दिये। उन्होंने कहा कि कैमरों के माध्यम से मॉनीटरिंग किया जाए। परिवहन मंत्री ने परिवहन निगम द्वारा अनुबंधित ढांबों पर साफ-सफाई बेहतर रखने और शौचालय की व्यवस्था सही रखने की था। बैठक में अपर मुख्य सचिव परिवहन वेंकटेश्वर लू, प्रबंध निदेशक मासूम अली सरवर, अपर प्रबंध निदेशक राम सिंह वर्मा मौजूद रहे।

कांग्रेस विधायक की साधु-संतों पर टिप्पणी को लेकर हंगामा

बालकनाथ बोले- घर से बाहर नहीं निकलने दूंगा

जयपुर। विधानसभा में आज कांग्रेस विधायक श्रवण कुमार की साधु-संतों पर टिप्पणी को लेकर जमकर हंगामा हुआ। श्रवण कुमार ने बुधवार को सदन में कहा था कि बाबाओं ने ही भट्टा बैठा रखा है। इस बयान पर आज संसदीय कार्य मंत्री जोगाराम पटेल सहित अलवर विधायक बाबा बालकनाथ ने श्रवण कुमार से माफी मांगने को कहा। टिप्पणी को लेकर विधानसभा में जमकर हंगामा हो गया। इस कारण विधानसभा की कार्यवाही थोड़ी देर के लिए स्थगित करनी पड़ी। हालांकि स्पीकर वासुदेव देवनानी ने श्रवण कुमार की टिप्पणी को सदन की कार्यवाही से हटाने का आदेश दे दिया है। श्रवण कुमार जब अनुदान मांगों पर बोल रहे थे, तब महंत बालकनाथ ने कहा कि आप अपने बयान पर स्थिति स्पष्ट कीजिए, अन्यथा बोलने नहीं देंगे। आपकी विधानसभा से लेकर घर तक पूरे संत समाज को इकट्ठा करना मेरा काम है। मैं घर से बाहर नहीं निकलने दूंगा।

आप स्पष्टीकरण दीजिए आप क्या मानते हैं। इस पर श्रवण कुमार ने कहा कि ये कह रहे हैं कि जीने नहीं दूंगा, तो बता दूं मैं जीना पसंद भी नहीं करता हूं। मरना पसंद करते हैं, झुकना पसंद नहीं करते। इस तरह दादागीरी से दबने वाला नहीं हूं, मैं अध्यक्ष की व्यवस्था मानता हूं। इससे पहले स्वास्थ्य मंत्री गजेंद्र सिंह खींवसर ने कहा कि हेल्थ डिपार्टमेंट में 50 हजार भर्तियां की जा रही हैं। डॉक्टर व नर्सिंगकर्मियों के सभी खाली पदों को जल्द भरा जाएगा। वहीं, बीजेपी विधायक कालीचरण सराफ गहलोत सरकार में शुरू हुई नंदकानन योजना पर सवाल उठाए। उन्होंने कहा की मंदिरों के संरक्षण वाली इस योजना को बिना बजट के ही शुरू कर दिया गया था। इससे पहले विधानसभा में आज की शुरूआत भी हंगामे से हुई। प्रश्नकाल के दौरान भ्रष्टाचार के मामलों में अफसर-कर्मचारियों के खिलाफ अभियोजन स्वीकृति से जुड़े सवाल पर जमकर नोकझोंक हुई। हंगामे से नाराज स्पीकर वासुदेव देवनानी ने विपक्षी विधायकों को जमकर फटकार लगाई। देवनानी ने कहा कि आपको बाहर निकालने का प्रस्ताव लाना पड़ेगा।

राज्यसभा सांसद मदन राठौड़ राजस्थान भाजपा के नए प्रदेशाध्यक्ष बने

पार्टी ने प्रदेश प्रभारी भी बदला; उप चुनाव से पहले संगठन में बड़ा बदलाव

जयपुर। राजस्थान में होने वाले उप चुनाव से पहले भाजपा संगठन ने प्रदेशाध्यक्ष और प्रदेश प्रभारी को बदल दिया है। राज्यसभा सांसद मदन राठौड़ नए प्रदेशाध्यक्ष होंगे। वहीं अरुण सिंह की जगह सांसद राधा मोहन दास अग्रवाल प्रदेश प्रभारी बनाए गए हैं। बीजेपी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा ने राठौड़ को प्रदेशाध्यक्ष नियुक्त किया है। दो दिन पहले ही सांसद सीपी जोशी ने केन्द्रीय नेतृत्व से मिलकर प्रदेशाध्यक्ष पद से इस्तीफा देने की पेशकश की थी। राठौड़ 5 महीने पहले ही राज्यसभा के सदस्य निर्वाचित हुए हैं। अब पार्टी ने उन्हें प्रदेश बीजेपी की नई जिम्मेदारी सौंप दी है। पार्टी ने मदन राठौड़ को अध्यक्ष बनाकर मूल ओबीसी के अपने वोट बैंक को ओर मजबूत किया हैं। मदन राठौड़ पाली की सुमेरपुर विधानसभा सीट से दो बार विधायक रहे। 2013 से 2018 में सरकारी उप मुख्य सचेतक भी रहे हैं। उन्हें संगठन का भी लंबा अनुभव हैं। पिछले साल हुए विधानसभा चुनावों में भी उन्होंने टिकट मांगा था, लेकिन पार्टी ने उन्हें टिकट नहीं दिया। जिसके बाद उन्होंने निर्दलीय चुनाव लड़ने की तैयारी कर ली थी। हालांकि उस वक्त उन्हें पीएम नरेंद्र मोदी ने फोन करके काम करते रहने को कहा था। कुछ महीने बाद ही उन्हें

राज्यसभा में भेज दिया गया। वहीं अब प्रदेश बीजेपी की जिम्मेदारी सौंपी गई है। मदन राठौड़ पीएम मोदी के पुराने परिचित हैं। लंबे समय से संगठन में सक्रिय राठौड़ ने बीजेपी के दिग्गज नेताओं के साथ काम किया हैं। जनसंघ से लेकर बीजेपी की यात्रा में शामिल रहे हैं। बीजेपी की पुरानी और नई पीढ़ी दोनों के साथ काम करने का अनुभव रखते हैं। राठौड़ मूल ओबीसी में घांची जाति से हैं। मदन राठौड़ के बीजेपी प्रदेशाध्यक्ष नियुक्त होने पर सीएम भजनलाल शर्मा ने भी उन्हें बधाई दी हैं। सीएम ने अपने एक्स अकाउंट पर लिखा- निःसंदेह, आपके ऊजावान नेतृत्व और कुशल मार्गदर्शन में भाजपा ह्यसबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वासह्न के मूल मंत्र के साथ प्रदेश में सफलता के नवीन मानक स्थापित करेगी। मैं प्रभु श्रीराम से आपके उत्कृष्ट कार्यकाल के लिए मंगलमय कामना करता हूं। बीजेपी के निवर्तमान प्रदेशाध्यक्ष सीपी जोशी ने भी मदन राठौड़ को बधाई दी। जोशी ने अपने एक्स अकाउंट पर लिखा- भाजपा के वरिष्ठ नेता और राज्यसभा सांसद मदन राठौड़ को भाजपा राजस्थान के प्रदेश अध्यक्ष दायित्व के लिए हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष नियुक्त होने के बाद दैनिक भास्कर से विशेष बातचीत में मदन राठौड़ ने कहा कि मैं पार्टी का सिपाही हूं। सिपाही की खुद की कोई इच्छा नहीं होती, उसे किस मोर्चे पर तैनात किया जाता है, उसका ही धर्म होता है कि वह वहां अपनी भूमिका बखूबी निभाए। मैं पार्टी को हर मोर्चे पर मजबूत करने में अपनी भूमिका मजबूती से निभाऊंगा। केंद्रीय नेतृत्व ने मुझ जैसे कार्यकर्ता को बड़ी जिम्मेदारी दी है। पार्टी की मजबूती और जनता के बीच लोकप्रियता ही सबसे बड़ी प्राथमिकता है। सरकार और संगठन समन्वय से राजस्थान की जनता की सेवा करेंगे। राठौड़ ने कहा कि हम उप चुनाव में पांचों सीटों (दौसा, उनियारा, झुंझुनूं, चौरासी, खींवसर) पर जीत दर्ज करेंगे, इसमें कोई संदेह नहीं होना चाहिए। वसुंधरा राजे के दूसरे कार्यकाल में मदन राठौड़ विधानसभा में बीजेपी के उप मुख्य सचेतक और कालू लाल गुर्जर सरकारी मुख्य सचेतक थे। मदन राठौड़ सदन में खूब सक्रिय रहते थे। उस दौरान कांग्रेस के केवल 21 विधायक थे। गोविंद सिंह डोटासरा कांग्रेस विधायक दल के सचेतक थे। डोटासरा विधानसभा में सरकार पर खूब हमलावर रहते थे, मदन राठौड़ उन्हें कई बार काउंटर करते थे, खूब वार पलटवार होते थे। डोटासरा मंत्रियों पर खूब सवाल उठाते थे, टोकते थे। मदन राठौड़ मजाकिया लहजे में डोटासरा पर तंज कसते हुए कहते थे आप तो टोकासरा हो। पहले डोटासरा और मदन राठौड़ अपनी पार्टियों के सचेतक और उप सचेतक के नाते विधानसभा में एक-दूसरे पर वार पलटवार करते थे। अब राठौड़ बीजेपी प्रदेशाध्यक्ष बन गए हैं, डोटासरा कांग्रेस प्रदेशाध्यक्ष हैं, दोनों अब सियासी मोर्चे पर आमने-सामने होंगे। पार्टी ने उप चुनावों से पहले प्रदेश प्रभारी की भी नियुक्ति कर दी है। उत्तरप्रदेश से राज्यसभा सांसद और पार्टी के राष्ट्रीय महामंत्री डॉ राधामोहन दास अग्रवाल को राजस्थान का प्रदेश प्रभारी नियुक्त किया गया है। अग्रवाल कर्नाटक के भी प्रदेश प्रभारी है। उन्हें अब राजस्थान की भी जिम्मेदारी सौंपी गई है। पार्टी ने प्रदेश में पहले से सह प्रभारी के तौर पर काम कर रही विजया रा-हटकर को पद पर बरकरार रखा है। अरुण सिंह को पार्टी ने करीब तीन महीने लोकसभा चुनावों में राजस्थान से हटाकर आंध्र प्रदेश में प्रदेश चुनाव प्रभारी की नई जिम्मेदारी सौंपी थी। विधानसभा चुनावों के बाद से ही अरुण सिंह राजस्थान में कम सक्रिय थे। संगठन महामंत्री चंद्रशेखर की राजस्थान से विदाई के बाद से ही लगातार यह कयास लगाए जा रहे थे कि सिंह को भी जल्द ही राजस्थान से हटाया जाएगा। इससे पहले भाजपा प्रदेशाध्यक्ष सीपी जोशी ने अपने पद से इस्तीफे की पेशकश कर दी थी। पिछले 4 दिन से जोशी दिल्ली में थे। वे केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह और राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्?डा से मिले भी थे। जोशी ने इस्तीफे की एक बार पहले भी लोकसभा चुनावों के परिणाम आते ही पेशकश कर दी थी। गुरुवार रात पार्टी ने इस्तीफा मंजूर करते हुए नए प्रदेशाध्यक्ष का ऐलान कर दिया।

केशव मौर्या को हराने वाली विधायक पल्लवी पटेल से सीएम योगी ने की मुलाकात

उत्तर प्रदेश। सिराथू से समाजवादी पार्टी की विधायक और अपना दल कमेरावादी की कार्यकारी अध्यक्ष पल्लवी पटेल ने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से मुलाकात की है। पल्लवी ने विधानसभा चुनाव 2022 में सिराथू से डिप्टी सीएम केशव मौर्य को हराया था। पल्लवी को केशव का धुर विरोधी माना जाता है।

ऐसे में पल्लवी और योगी की मुलाकात के राजनीतिक मायने निकाले जा रहे हैं। केशव प्रसाद मौर्य का योगी सरकार के साथ टकराव चल रहा है। केशव कभी संगठन को सरकार से बड़ा बता रहे हैं, तो कभी संविदा और आउटसोर्सिंग भर्ती में आरक्षण का

मुद्दा उठा रहे हैं। यूं तो सीएम योगी और पल्लवी पटेल की मुलाकात को शिष्टाचार भेंट बताया जा रहा है। लेकिन, चर्चा है कि इस मुलाकात के जरिये दोनों ने अपने राजनीतिक विरोधियों को संदेश दिया है। दरअसल, पल्लवी पटेल केशव प्रसाद मौर्य की तो विरोधी हैं ही, उनका अपना दल (एस) के कार्यकारी अध्यक्ष और प्रदेश सरकार में मंत्री आशीष पटेल से भी पारिवारिक राजनीतिक रंजिश है।

जिलाधिकारी की अध्यक्षता में बैठक आयोजित

हमीरपुर। आज जिलाधिकारी हमीरपुर की अध्यक्षता में जनपद स्तरीय टास्क फोर्स की बैठक अब्दुल कलाम सभागार कक्ष हमीरपुर में की गई। बैठक में जिलाधिकारी द्वारा टास्कफोर्स के सभी सदस्यों को निर्देश दिये गये कि जनपद में प्रर्वतन का कार्य कड़ाई से करना सुनिश्चित करें, टास्कफोर्स के सदस्य निरन्तर प्रर्वतन कार्य में सक्रिय रहे अवैध खनन/परिवहन पर प्रभावी ढंग से अकुंश लगाया जाये। ताकि किसी भी दशा में अवैध खनन/परिवहन न होने पाये। जीरो प्वाइंट से ही ओवरलोड़िग पर प्रभावी नियंत्रण सुनिश्चित किया जाये तथा प्रर्वतन कार्य को प्रभावी बनाने व अवैध खनन/परिवहन/भण्डारण/ओवरलोड़िग को रोकने के लिये आधुनिक तकनीकी का प्रयोग किया जाये तथा यह भी सुनिश्चित किया जाये कि उपखनिज के कीमतो में अनावश्यक वृद्धि न हो। इसके साथ यह भी सुनिश्चित किया जाये ।

सम्पादकीय....

गहरी राजनीति चाल

केंद्र की राजग सरकार ने एक महत्वपूर्ण एवं साहसिक आदेश के जरिये सरकारी कर्मचारियों के राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की गतिविधियों में शामिल होने पर लगी रोक को हटा कर लोकतांत्रिक एवं संवैधानिक भावना एवं मूल्यों का जीवंत किया है। भले ही इस आदेश को लेकर विपक्षी राजनीतिक दलों की तल्ख प्रतिक्रिया सामने आ रही है। वहीं संघ ने फैसले का स्वागत करते हुए कहा है कि तत्कालीन सरकार ने निराधार ही शासकीय कर्मियों के संघ की गतिविधियों में भाग लेने पर रोक लगायी थी। निश्चित ही वर्तमान सरकार का यह निर्णय लोकतांत्रिक व्यवस्था को पुष्ट करने वाला है क्योंकि राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ एक गैर-राजनीतिक संगठन है, गत 99 वर्षों से सतत राष्ट्र के पुनर्निर्माण एवं समाज की सेवा में संलग्न संघ एक रचनात्मक, सृजनात्मक एवं सांस्कृतिक संगठन है। राष्ट्रीय सुरक्षा, एकता-अखंडता एवं प्राकृतिक आपदा के समय में संघ के योगदान की विभिन्न राजनीतिक विचारधारा के नेताओं एवं दलों ने प्रशंसा भी की है। इस नये आदेश को लेकर इंडी गठबंधन के दलों में खलबली एवं बौखलाहट का सामने आना स्वाभाविक है, क्योंकि इस आदेश से संघ की ताकत बढ़ेगी, जो इन विपक्षी दलों की चिन्ता का बड़ा कारण है।

दरअसल, आरोप है कि पूर्व की कांग्रेस सरकारों ने समय-समय पर सरकारी कर्मचारियों की संघ के कार्यक्रमों में शामिल होने पर रोक लगा दी थी। संघ की गतिविधियों में शामिल होने पर कर्मचारियों को कड़ी सजा देने तक का प्रावधान लागू किया गया था। सेवानिवृत होने के बाद पेंशन लाभ इत्यादि को ध्यान में रखते हुए भी अनेक सरकारी कर्मचारी चाहते हुए भी संघ की गतिविधियों में शामिल होने से बचते थे। हालांकि, इस बीच मध्यप्रदेश सहित कई राज्य सरकारों ने इस आदेश को निरस्त कर दिया था, लेकिन इसके बाद भी केंद्र सरकार के स्तर पर यह वैध बना हुआ था। इस मामले में एक वाद इंदौर की अदालत में चल रहा था, जिस पर अदालत ने केंद्र सरकार से सफाई मांगी थी। इसी पर कार्रवाई करते हुए केंद्र सरकार ने नौ जुलाई को एक ऑर्डर जारी करते हुए उक्त प्रतिबंधों को समाप्त करने की घोषणा कर दी। निश्चित ही यह आदेश संघ से जुड़े एवं राष्ट्रीय विचारधारा वाले सरकारी कर्मचारियों के लिये एक नयी किरण है। आपातकाल में इंदिरा गांधी सरकार की तानाशाही खुलकर सामने दिखी थी, लेकिन उससे पहले भी तानाशाही कदम उठाए जाते रहे थे। दरअसल, 7 नवंबर 1966 को संसद के सामने गोहत्या के खिलाफ एक बड़ा प्रदर्शन हुआ था। 30 नवंबर 1966 को संघ-जनसंघ के प्रभाव से हिलकर इंदिरा गांधी ने सरकारी कर्मचारियों के संघ में शामिल होने पर प्रतिबंध लगा दिया। क्योंकि संघ व जनसंघ के प्रयासों से

आओ मिलकर ले संकल्प, करे गाय का संरक्षण

ब्यूरो चीफ हिमांशु सिंह राजपूत/ नवयुग समाचार दमोह
हटा/दमोह मध्य प्रदेश

वर्तमान स्तिथि के अनुसार गायों की हालत हमारे देश में बहुत बुरी हो चुकी है अगर बात करें गायों की तो जब तक गौमाता दूध देती है तो लोग उसे अपने घर में रखते हैं दूध न देने पर गौमाता को घर से बहार निकल देते हैं। अगर पशुधन की गड़ना के आंकड़ों के अनुसार भारत में 47% गौमाता आवारा गायों की तरह सड़क पर घूम रही है जो की शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रो के लिए एक अहम् मुद्दा बन चुका है। आवारा गाय यातायात के लिए एक बाधा बन चुकी है और अक्सर आवारा गौवंश सड़क दुर्घटनाओं में एक्सीडेंट का शिकार हो जाते हैं। लेकिन कभी हम लोगो नें यह नहीं सोचा कि इन बेजुबानों को आवारा बनाने में कौन जिम्मेदार है आखिर में देखा जाये तो हमने ही इन बेजुबान जीवों को आवारा बनाया है हम बिना सोचे समझे उन्हें युहीं छोड़ देते हैं। भारत एक ऐसा देश है जहाँ गायों को पवित्र और पूजनीय माना जाता है, वहीं भारत में सबसे अधिक प्रताड़ित जोवों को ही किया जाता है। डेयरी के लिए मानवीय मांग को पूरा करने के लिए गायों के ऊपर बहुत अत्याचार किया जाता है। भारत में गाय का विशेष कोई कानून भी नहीं है। हम चाहते हैं कि गाय को माता का दर्जा दिया जाये और गाय को पूज्य माना जाये। सभी गाय कि सेवा करें और रक्षा करें। दिनांक 24/07/2024 शाम को उपकाशी नगरी हटा के अधियारा बंगीचा में गौ माता के पैर में घाव होने पर जानकारी मिलते ही सुरभी गौ सेवा समिति के संचालक श्री अंशुल तिवारी जी एवं उनकी टीम और ह्लभगवती मानव कल्याण संगठन शाखा हटाह्व उपाध्यक्ष सुनील रैकवार (सागर भैया) एवं गुड्डा तेकाम ने गौ माता के पैर में दवाई एवं मलहम पट्टी की

उन्नाव जिला सहकारी बैंक के अध्यक्ष अरुण सिंह एवम सचिव/मुख्य कार्यपालक अधिकारी संजय पाण्डेय को किया गया सम्मानित

मोहम्मद इरफान खान

लखनऊ।लखनऊ के चौधरी चरण सिंह सहकारिता भवन स्थित सभागार में आयोजित एक दिवसीय सहकारिता कॉन्फ्रेंस में उन्नाव जनपद को दो पुरस्कार प्राप्त हुए सहकारिता राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) जे. पी. एस राठौर द्वारा प्रमुख सचिव सहकारिता राजेश कुमार सिंह

एवम निबंधक अनिल कुमार की उपस्थिति में उन्नाव जिला सहकारी बैंक को निक्षेप, ऋण वितरण , एवं वसूली, ओवरऑल परफॉर्मेंस में प्रथम पुरस्कार के साथ एवम सदस्यता अभियान में उत्कृष्ट कार्य करने हेतु अरुण सिंह अध्यक्ष जिला सहकारी बैंक उन्नाव एवम सचिव मुख्य कार्यपालक अधिकारी संजय पांडे को सम्मानित किया गया ...

जनपद का सहकारिता परिवार बैंक को मिली इस उपलब्धि से अपने आप को गौरांवित महसूस कर रहा है उल्लेखनीय है प्रदेश में सदस्यता महा अभियान में चतुर्थ स्थान प्राप्त करना एवं कार्य कुशलता व परफॉर्मेंस में पूरे उत्तर प्रदेश में प्रथम स्थान प्राप्त कर जनपद की सभी शाखाएं लाभ पर एवम प्रगति की ओर अग्रसर है

विपक्ष की मुस्लिमों के प्रति अंधश्रद्धा से भाजपा बनी मजबूत

मुस्लिमों का हितेषी बनने का नया मामला बांग्लादेश का है। पश्चिमी बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने कहा कि हिंसा प्रभावित बांग्लादेश के संकटग्रस्त लोगों के लिए पश्चिम बंगाल के दरवाजे खुले रखेंगी और उन्हें आश्रय देंगी। मुस्लिम वोटों के लिए विपक्षी नेता किसी भी हद तक जा सकते हैं। विपक्षी दलों को लगना चाहिए कि हितेषी बनने का दिखावा करने मात्र से मुस्लिम वोटों को बटोरा जा सकता है। इसके बाद इन दलों मे आपस में ही सच्चा हितेषी साबित करने की प्रतिस्पर्धा हो जाती है। वोटों की खातिर मुस्लिमों के प्रति इस अंधश्रद्धा का ही परिणाम है कि इसके प्रतिक्रियास्वरूप भाजपा ने न सिर्फ राष्ट्रीय पर संगठन की मजबूत पकड़ बना ली, बल्कि लगातार तीसरी बार केंद्र में सत्ता में भी आ गई। हालांकि इसमें काफी हद तक केंद्र सरकार के विकास कार्य भी शामिल हैं।

मुस्लिमों का हितेषी बनने का नया मामला बांग्लादेश का है। पश्चिमी बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने कहा कि हिंसा प्रभावित बांग्लादेश के संकटग्रस्त लोगों के लिए पश्चिम बंगाल के दरवाजे खुले रखेंगी और उन्हें आश्रय देंगी। आश्चर्य की बात यह है कि यह मुद्दा मुख्यमंत्री ममता के अधिकार क्षेत्र में नहीं आता। यह विदेश मंत्रालय के अधीन आता है। विदेश मंत्रालय केंद्र सरकार के अधीन काम करता है। यह जानते हुए भी ममता ने मुस्लिम वोट बैंक पर पकड़ बनाए रखने के लिए ऐसा बयान दिया। इससे पहले भी ममता बनर्जी सरेआम मुस्लिमों का पक्ष लेती रही हैं। इसके लिए बेशक कानून की मंजूरी हो या नहीं। बर्मा के रोहिंग्या शरणार्थियों का मसला भी केंद्र सरकार के अधीन था। केंद्र सरकार ही तय कर सकती है कि भारत में किसे शरण देनी और किसे नहीं। बांग्लादेश ने विरोध जताया

रोहिंग्या शरणार्थी संकट पर केंद्र के दृष्टिकोण का विरोध करते हुए ममता ने कहा था कि सभी आम लोग आतंकवादी नहीं हैं और उन्होंने समुदाय का समर्थन करने की आवश्यकता पर जोर दिया। गौरतलब है कि नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार द्वारा 40,000 रोहिंग्या शरणार्थियों को निर्वासित करने की योजना बनाई थी। ममता बनर्जी की शह पाकर कई मुस्लिम संगठनों से जुड़े हजारों प्रदर्शनकारियों ने कोलकाता में रैली निकाली और प्रधानमंत्री मोदी की निर्वासन योजना का विरोध किया तथा रोहिंग्या शरणार्थियों के लिए भारत में आश्रय की मांग की। यह मुद्दा मुस्लिमों के वोट बैंक से जुड़ा हुआ था। इसमें दूसरे विपक्षी दल भी कूद गए। मुस्लिमों के मामले में सभी विपक्षी दलों को लगता है कि कहीं दूसरा दल वोट बैंक का ज्यादा हिस्सा नहीं ले जाए, इसी वजह मुद्दा चाहे राज्यों का हो या फिर केंद्र सरकार से जुड़ा हो, बहती गंगा में हाथ धोने से कोई पीछे नहीं रहना चाहता। मुस्लिम वोट की खातिर ममता किसी भी हद से गुजरने को तैयार रहती हैं।

इंटर्नशिप योजना के अंतर्गत युवाओं को पांच वर्षों के दौरान मिलेगा काम

ऐसे भी कई निर्णय लिए जा रहे हैं जिनसे आने वाले समय में धरातल पर युवाओं को लाभ होता दिखाई देगा। एक करोड़ युवाओं को आगामी 5 वर्षों के दौरान इंटर्नशिप योजना के अंतर्गत काम दिया जाएगा। ताकि ये युवा वर्ग के नागरिक रोजगार प्राप्त करने हेतु सक्षम हो सकें। हाल ही में लोकसभा के लिए सम्पन्न हुए चुनाव में भारतीय नागरिकों ने लगातार तीसरी बार एनडीए की अगुवाई में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी को सत्ता की चाबी आगामी पांच वर्षों के लिए इस उम्मीद के साथ पुनः सौंपी है कि आगे आने वाले पांच वर्षों में केंद्र सरकार द्वारा देश में आर्थिक विकास को और अधिक गति देने के प्रयास जारी रखे जाएंगे। भारत की वित्तमंत्री श्रीमती निर्मला सीतारमन ने 23 जुलाई 2024 को मोदी सरकार के तीसरे कार्यकाल का पहला बजट भारतीय संसद में पेश किया है। इस बजट के माध्यम से भारत की आर्थिक विकास दर को उच्च स्तर पर ले जाने का प्रयास किया गया है।

केंद्र सरकार ने वित्तीय वर्ष 2024-25 के लिए 9 प्राथमिकताएं तय की है। कृषि क्षेत्र में उत्पादकता को बढ़ाना, युवाओं के लिए रोजगार के अधिकतम अवसर निर्मित करना एवं उनके कौशल को विकसित करना, गरीब नागरिकों को भी विकास में हिस्सेदारी देना एवं उन्हें सामाजिक न्याय देना, विनिर्माण इकाईयों को बढ़ावा देना, शहरी क्षेत्रों को विकसित करना, ऊर्जा की उपलब्धता सुनिश्चित करना, आधारभूत ढांचा विकसित करना, नवाचार, शोध एवं विकास करना तथा नई पीढ़ी के सुधार कार्यक्रमों को लागू करना। केंद्र सरकार एवं कुछ राज्य सरकारों द्वारा पूंजीगत खर्चों में लगातार की जा रही वृद्धि के चलते भारत की आर्थिक विकास दर को पंख लगते दिखाई दे रहे हैं। वर्ष 2022-23 के बजट में केंद्र सरकार द्वारा 7.5 लाख करोड़ रुपए के पूंजीगत खर्चों का प्रावधान किया गया था, वित्तीय वर्ष 2023-24 में इसमें 33 प्रतिशत की भारी भरकम वृद्धि करते हुए इसे बढ़ाकर 10 लाख करोड़ रुपए का कर दिया गया था। अब वित्तीय वर्ष 2024-45 के लिए इसे और आगे बढ़कर 11.11 लाख करोड़ रुपए का कर दिया गया है, जो भारत के सकल घरेलू उत्पाद का 3.4 प्रतिशत है। इससे भारतीय अर्थव्यवस्था में न केवल स्थिरता दिखाई देने लगी है बल्कि यह लगातार तेज गति से आगे बढ़ रही है। आज पूरे विश्व में केवल भारतीय अर्थव्यवस्था ही एक चमकते सितारे के रूप में दिखाई दे रही है। बजट का गहराई से अध्ययन करने पर ध्यान में आता है कि केंद्र सरकार ने अब भारत में रोजगार के अधिकतम अवसर निर्मित करने की ठान ली है। भारत के युवाओं एवं महिलाओं को रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने एवं कौशल विकसित करने की दृष्टि से 2 लाख करोड़ रुपए की 5 योजनाओं के एक पैकेज की घोषणा की है। शिक्षा, रोजगार एवं कौशल विकास के लिए 1.48 लाख करोड़ रुपए की राशि इस बजट में आबंटित भी कर दी गई है। प्रधानमंत्री पैकेज के अंतर्गत एढत्र्ह्ढ के प्रथम बार सदस्य बनने पर औपचारिक क्षेत्र के कर्मचारियों के एढत्र्ह्ढ खातों में एक माह का वेतन जमा किया जाएगा। इन कर्मचारियों को प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण योजना के अंतर्गत एक माह का वेतन (15000 रुपए की अधिकतम राशि तक) तीन किश्तों में उनके खातों में जमा किया जाएगा। इस योजना के अंतर्गत एक माह में एक लाख रुपए तक का वेतन पाने वाली कर्मचारी ही पात्र होंगे। इससे 2.1 करोड़ युवाओं को लाभ होने की सम्भावना बजट में व्यक्त की गई है। ऐसे भी कई निर्णय लिए जा रहे हैं जिनसे आने वाले समय में धरातल पर युवाओं को लाभ होता दिखाई देगा। एक करोड़ युवाओं को आगामी 5 वर्षों के दौरान इंटर्नशिप योजना के अंतर्गत काम दिया जाएगा। ताकि ये युवा वर्ग के नागरिक रोजगार प्राप्त करने हेतु सक्षम हो सकें। इन युवाओं को प्रति माह 6,000 रुपए तक का वाजीफा सम्बंधित कम्पनियों द्वारा अदा किया जाएगा। वजीफे की इस राशि को कम्पनियों के लिए लागू निगमित सामाजिक दायित्व योजना के अंतर्गत किया गया खर्च माना जाएगा। भारत की सबसे बड़ी 500 कम्पनियों को इस योजना के अंतर्गत युवाओं को इंटर्नशिप की सुविधा देनी होगी। साथ ही, केंद्र सरकार द्वारा भी इन युवाओं को प्रतिमाह 5000 रुपए अदा किए जाएंगे। यह केंद्र सरकार का एक सूझबूझ भरा निर्णय कहा जा सकता हैं। साथ ही, विनिर्माण के क्षेत्र के रोजगार के नए अवसर निर्मित करने की पहल भी की जा रही है। नए कर्मचारियों के एढत्र्ह्ढ खाते में जमा होने वाली राशि को आगामी 4 वर्षों तक केंद्र सरकार द्वारा वहन किया जाएगा, इससे कर्मचारी एवं नियोक्ता दोनों को ही लाभ होगा। इस योजना का लाभ 30 लाख युवाओं को होने जा रहा है। एक अन्य योजना के अंतर्गत नियोक्ता को अपने नए कर्मचारियों के एढत्र्ह्ढ खातों में जमा की जाने वाली राशि की प्रतिपूर्ति आगामी 2 वर्षों तक केंद्र सरकार द्वारा की जाएगी। इससे रोजगार के 50 लाख नए अवसर निर्मित होने की सम्भावना है। केंद्र सरकार द्वारा हाल ही के समय में भारतीय सनातन संस्कृति के संस्कारों को बढ़ावा देने के उद्देश्य से धार्मिक पर्यटन को देश में बढ़ावा दिया जा रहा है। धार्मिक पर्यटन से देश में रोजगार के लाखों अवसर निर्मित हो रहे हैं एवं गरीब वर्ग की आय में बेतहाशा वृद्धि हो रही है। श्री विष्णुपाद मंदिर कोरिडोर, गया, बिहार एवं श्री महाबोधि मंदिर कोरिडोर बोधगया, बिहार को विकसित किए जाने की घोषणा की गई है। इसे काशी विश्वनाथ मंदिर कोरिडोर की तर्ज पर विकसित किया जाएगा। इसी प्रकार देश में अन्य मंदिरों को भी विकसित किया जा रहा है ताकि देश में इन मंदिरों में श्रद्धालुओं को किसी प्रकार की असुविधा नहीं हो तथा भारत को वैश्विक पटल पर एक बहुत बड़े धार्मिक पर्यटन केंद्र के रूप में दिखाया जा सके।

भारत के ग्रामों में निवास कर रहे नागरिक रोजगार प्राप्त करने के उद्देश्य से शहरों की ओर पलायन करते हैं। अतः ग्रामों में ही रोजगार के अधिकतम अवसर निर्मित करने के उद्देश्य से ग्रामीण विकास की मद पर 2.66 लाख करोड़ रुपए की राशि का प्रावधान इस बजट में किया गया है। साथ ही, सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योग को बढ़ावा देने के उद्देश्य से मुद्रा लोन योजना के अंतर्गत प्रदान की जाने वाली ऋण राशि की सीमा को 10 लाख रुपए से बढ़ाकर 20 लाख रुपए कर दिया गया है। यह सुविधा तरुण श्रेणी के अंतर्गत प्राप्त ऋण के व्यवसाईयों को प्राप्त होगी एवं जिन्होंने पूर्व में लिए गए 10 लाख रुपए के ऋण की राशि को समय पर अदा कर दिया है। सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योगों के लिए भी ऋण की सीमा को बढ़ाकर 100 करोड़ रुपए तक कर दिया गया है। प्रधानमंत्री आवास योजना (शहरी) के अंतर्गत एक करोड़ आवासों का निर्माण किया जाएगा। इन एक करोड़ आवासों पर 10 लाख करोड़ रुपए की राशि का निवेश होगा

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक मनीष कुमार सिंह द्वारा शोभित आफसेट के-450 इंद्रलोक कॉलोनी, पोस्ट मानसनगर, लखनऊ - 226023 उ.प्र. से मुद्रित कराकर मुकेरिया, महसी, रामगांव, बहराइच से प्रकाशित। आरएनआई/टाइटल कोड-UPHIN49594
संपादक-मनीष कुमार सिंह मो.- +91 9984176988 ई-मेल- navyugsamacharindia@gmail.com उप संपादक-मो. इजहार वारसी, मो. +91 7081640677, प्रबंध संपादक-संजय कुमार त्रिपाठी, मो.- +91 9044973372, सभी विवादों का न्याय क्षेत्र बहराइच, उ.प्र. होगा।

एक पेड़ माँ के नाम की थीम पर किया गया वृक्षारोपण

संजय त्रिपाठी/नवयुग समाचार

कानपुर नगरः दयानंद गर्ल्स पी जी महाविद्यालय में कारगिल विजय दिवस 24-26 जुलाई के अनवरत एक वृक्ष एक कैडेट् के अंतर्गत वृहद वृक्षारोपण आयोजित किया गया। इस अवसर पर एनसीसी कैडेट्स द्वाराएक पेड़ मां के नाम थीम के आधार पर वृक्षारोपण किया गया। कार्यक्रम में महाविद्यालय की प्राचार्या प्रो वंदना निगम, स्ववित्तपोषित पाठ्यक्रम निदेशिका प्रो अर्चना वर्मा , ए.एन.ओ. प्रो०(कै) शुभ्रा राजपूत और डा मनीषी पाण्डेय तथा 34 एनसीसी कैडेट्स ने सहभागिता की। इस दौरान नीम, जामुन, पीपल, अमरूद, कनेर, बरगद, अशोक आदि के पौधों का रोपण किया गया। प्रो शुभ्रा राजपूत ने बताया की पेड़ लंबे समय तक ऑक्सीजन प्रदान करके, वायु की गुणवत्ता में सुधार करके, जलवायु सुधार करके, जल संरक्षण करके, मिट्टी को संरक्षित करके और वन्यजीवों का समर्थन करके अपने पर्यावरण में योगदान करते हैं।

कारगिल की पूर्व संध्या पर सीतेश ने की परम वीर चक्र विजेता के पिता से मुलाकात

मोहम्मद इरफान खान

उन्नाव।भारतीय जनता पार्टी पूर्व सैनिक प्रकोष्ठ अवध क्षेत्र के संयोजक सीतेश सिंह ने कारगिल विजय दिवस की पूर्व संध्या पर कारगिल युद्ध के हीरो और अवध क्षेत्र के एक मात्र परमवीर चक्र विजेता शहीद कैप्टन मनोज कुमार पांडेय के वृद्ध पिता गोपी चंद्र पांडेय के लखनऊ स्थित आवास पर जाकर पुष्प गुच्छ भेंट कर उनसे भेंट की और स्वस्थ की जानकारी ली। क्षेत्रीय संयोजक ने पांडेय से पारिवारिक और कई विषयों पर चर्चा की। परमवीर चक्र विजेता के पिता ने सीतेश सिंह को आभार व्यक्त करते हुए कहा कि आप समय समय पर आकर हमसे मुलाकात करते हो जिससे मुझे बहुत ही आत्मबल मिलता है। सीतेश सिंह ने गोपी चंद्र पांडेय को भरोसा दिलाया की ये हमारा फर्ज है हम सभी पूर्व सैनिक आपका परिवार है। बीजेपी सैनिक प्रकोष्ठ आपके हर पल हर तरह की परिस्थितियों में सदैव आपके साथ है। क्षेत्रीय संयोजक ने शहीद कैप्टन मनोज कुमार पांडेय के पैतृक गांव में किए गए सम्मान कार्यक्रम और शहीद स्मारक के बारे में विस्तृत चर्चा की। सीतेश सिंह अपने दायित्व के निर्वाह में पूरी कोशिश और लगन के साथ सदैव अपने कर्म के पथ पर अग्रसर रहते हैं इसमें कोई संशय नहीं है। ऐसा सैनिक जो हमेशा समाज के लिए हर क्षेत्र में सक्रिय होकर अपने काम के अंजाम देता है वह अवश्य ही अपने कर्म को चरितार्थ करता है इसका जीता जागता उदाहरण है ये पूर्व सैनिक।

सावन स्पेशलः क्या आप जानते हैं
जागेश्वर धाम शिवली से जुड़ी ये खास बातें

संजय त्रिपाठी

आकाश शुक्ला/नवयुग समाचार

कानपुर देहात/शिवली : यूपी के कानपुर देहात जिले में शिवली कस्बा शिवली के जागेश्वर मंदिर का शिवलिंग भक्तों द्वारा स्थापित नहीं किया गया है। इसको स्वयंभू माना जाता है। क्योंकि यह स्वयं उत्पन्न हुआ था। इस शिवलिंग के बारे में भक्तों की मान्यता है कि इसका दूसरा छोर पाताल तक जाता है। इसी शिवलिंग के नाम पर कस्बा का प्राचीन समय में नाम शिवली पड़ा था। कस्बा के अलावा भी आसपास के एक दर्जन गांव के साथ में शिवली शब्द आज भी जुड़ा है। जागेश्वर धाम में मौजूद प्रकृति प्रदत्त शिवलिंग की अजीबोगरीब दास्तां है कस्बा एवं क्षेत्रवासियों की मान्यता के अनुसार सैकड़ों वर्ष पुराने जागेश्वर मंदिर में स्थापित शिवलिंग के आसपास वर्षों पहले विशाल जंगल हुआ करता था जहां बंजारे अपने जानवर चराने जाया करते थे। उन बंजारों की एक गाय अक्सर शाम को जानवरों के झुंड से अलग होकर शिवलिंग के पास जाया करती थी और शिवलिंग के पास खड़े होते ही उस गाय का सारा दूध अपने आप शिवलिंग पर निकल कर गिर जाता था। काफी दिनों से हो रही इस अप्रत्याशित घटना को भापकर बंजारों ने उस गाय का पीछा किया और उस स्थान को खोज निकाला जहां मिट्टी के नीचे दवे शिवलिंग पर उस गाय का दूध गिर जाता था। बंजारों में इस बात की जानकारी कस्बे के लोगों को दी तो लोगों ने दूसरे ही दिन से उस स्थान की सफाई कर मिट्टी को खोदना शुरू कर दिया। कुछ मिट्टी के हटते ही शिवलिंग दिखाई पड़ा। भगवान शंकर के शिवलिंग को खोदकर दूसरी जगह पर स्थापित करने के उद्देश्य से लोगों ने काफी गहराई तक खुदाई की लेकिन शिवलिंग को बाहर नहीं निकाला जा सका। तब कुछ प्रबुद्ध लोगों ने उसी स्थान पर सफाई आदि करके पूजन पाठ शुरू कर दिया और धीरे धीरे वहां पर विशाल मंदिर बनवा दिया गया। क्षेत्रवासियों का यह भी मत है कि इस कस्बे का नाम शिवली इसी शिवलिंग की वजह से रखा गया था। आज भी इस कस्बे को लोग शिव की नगरी के नाम से जानते है। आज इस स्थान पर दूरदूर से भक्तों का आना जाना लगा रहता है। सावन मास में यहां पर अनवरत ओम नमः शिवाय का जाप एवं रुद्राभिषेक कार्यक्रम चला करता है। जागेश्वर धाम से वर्ष के में दो बार विशाल कावड़ यात्रा भी निकाली जाती है। कानपुर का इतिहास पुस्तक में इस मंदिर के बारे में वर्णन है यहां के श्रद्धालुओं का मानना है कि जो भोले बाबा से सच्चे दिल से मन्नत मांगता है बाबा उसे पूरा करते हैं सावन में हजारों की संख्या में दूर दराज के क्षेत्र से यहां महादेव के दर्शन के लिए पहुंचते हैं।

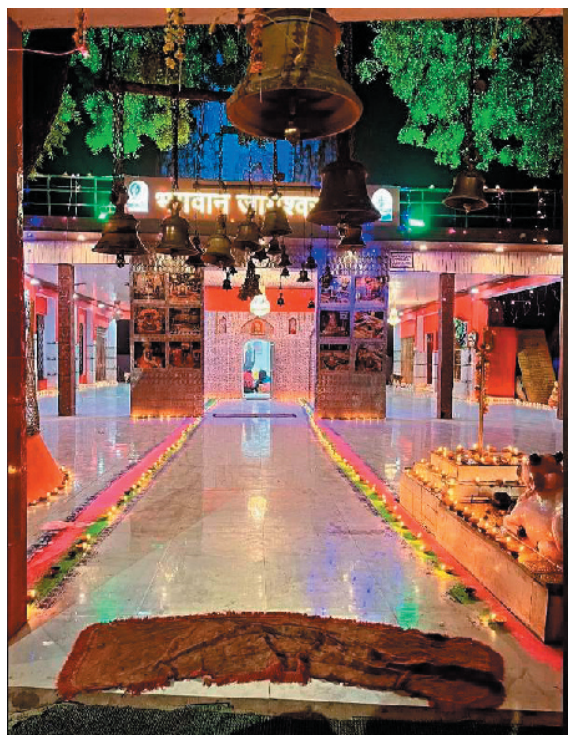

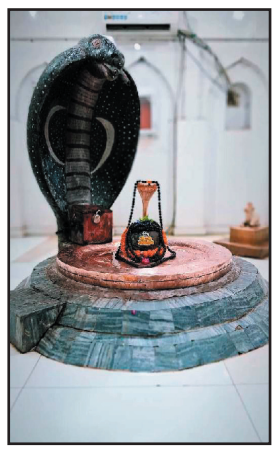

परिवहन सुविधा

यह शहर दक्षिण में उत्तर मध्य रेलवे लाइन पर स्थित रूरा रेलवे स्टेशन से सड़क मार्ग से जुड़ा हुआ है, जहाँ से पश्चिम में इटावा, आगरा, दिल्ली, मेरठ और पूर्व में कानपुर, इलाहाबाद, पटना के लिए तेज और सुपरफास्ट ट्रेनें उपलब्ध हैं। यह शहर पूर्व में कानपुर शहर से भी सड़क मार्ग से जुड़ा हुआ है। यह पश्चिम में रसूलाबाद से सड़क मार्ग से जुड़ा हुआ है और उत्तर में शिवराजपुर में जीटी रोड नेशनल हाईवे से जुड़ा हुआ है ।

स्कूल सुविधा

तारा चंद इंटर कॉलेज (मुख्य बस स्टॉप के पास)
जय जागेश्वर इंटर कॉलेज (जागेश्वर मंदिर के पास)
श्री कनहिया लाल बाबू राम विद्या पीठ उच्च विद्यालय
फूलकुमारी इंटर कॉलेज आदि।

शिवली में धार्मिक स्थान
जागेश्वर मंदिरः यह एक महत्वपूर्ण धार्मिक केंद्र है।
शोभन मंदिरः हनुमान मंदिर (निकटतम)
साकेत धाम (भगवान कृष्ण और राधा का सुंदर मंदिर)
मानशिला मंदिर
माँ पंथा देवी मंदिर
माँ अथैया देवी मंदिर
माँ ईश्वरी देवी मंदिर
बाबा ओंकारेश्वर धाम बैदाना मोहल्ला बिरतियाना शिवली

यहाँ पर मेरा मानना है कि जो बाबा भोलेनाथ से सच्चे दिल से मन्नत मांगता है बाबा उसे पूरा करते हैं। सावन में हजारों की संख्या में दूर दराज के क्षेत्रों से श्रद्धालुजन महादेव के दर्शनों को पाने के लिए पहुंचते हैं।
हरी पाण्डेय (सुजानपुर शिवली)

यहां पर कई देवी देवताओं का मंदिर स्थापित हो चुके हैं मंदिर के बारे में यह मानता है कि यह भोले बाबा का सच्चा दरबार है यहां से श्रद्धालुओं का हुजूम लगा ही रहता है।
विनीत तिवारी (शिवली)

भक्तों की अगाध आस्था का केंद्र है बाबा जागेश्वर धाम, शिवली का जागेश्वर मंदिर पांडव नदी के किनारे स्थित है, स्टेट हाईवे 68 चौबेपुर विधूना मार्ग पर उत्तर दिशा की ओर चलकर मंदिर तक पहुंचता है।
सूर्यप्रकाश तिवारी (शिवली)
बाला जी प्रिंटिंग प्रेस

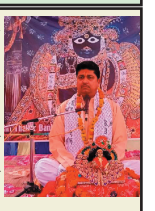

शिवली क्षेत्र के जागेश्वर मंदिर के अलावा भी कई मंदिर हैं साकेत धाम, महाकालेश्वर, नर्मदेश्वर, शोभन मंदिर, योगेश्वर मंदिर, ओंकारेश्वर पंचमुखी, रामेश्वर मंदिर, काडरी आश्रम अथैया माता, ईश्वरी माता आदि स्थित हैं जहां लोगों को शांति महसूस होती है।
मृदुल जी महाराज (भागवतचार्य)

आस्था, विश्वास, भक्तिभाव, धर्म कर्म से सराबोर भगवान शिव की नगरी है शिवली जहां सावन माह में विशेषकर भक्तों का सैलाब उमड़ता रहता है।
संजय त्रिपाठी
प्रबंध संपादक
नवयुग समाचार (दैनिक)

विश्व ओ आर एस सप्ताह के अवसर पर पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन

संजय त्रिपाठी/नवयुग समाचार

कानपुर नगरः भारतीय बालरोग अकादमी कानपुर द्वारा विश्व ओ आर एस सप्ताह के अवसर पर एलन हाउस पब्लिक स्कूल पनकी में पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें स्कूल के लगभग 100 बच्चों ने भाग लिया।

कार्यक्रम का संचालन डॉक्टर जेके गुप्ता ,डॉ अनुराग भारती , अध्यक्ष यशवंत राव, अजय खन्ना ने किया। कार्यक्रम में डॉ जेके गुप्ता ने बच्चों को डायरिया से बचाव हेतु बताया कि भोजन से पहले शौच के बाद साबुन से हाथ धोना चाहिए। पानी उबालकर पीना चाहिए।

दस्त होने पर डब्ल्यू एच ओ ओ आर एस घोल ही पीना चाहिए। अध्यक्ष डॉ यशवंत राव ने बताया कि बाजार के कटे फल व खुली मिठाइयों को नहीं खाना चाहिए वा सफाई का ध्यान रखना चाहिए। डॉ अनुराग भारती ने बच्चों को ओ आर एस बनाने की सही विधि बताई। कार्यक्रम के अंत में डॉक्टर यशवंत राव नेकहा कि भविष्य में भारतीय बाल और अकादमी इसी तरह के प्रोग्राम करती रहेगी। कार्यक्रम के अंत में पोस्टर प्रतियोगिता में 1 तान्या गुप्ता क्लास टेन 2 समृद्धि कृष्ण क्लास टेन 3 अदिति रॉय क्लास टेन रहे। इसी क्रम में दूसरा कार्यक्रम ओ आर एस पर नर्शिंग ट्रेनिंग का कार्यक्रम तुलसी हॉस्पिटल सिविल लाइंस में किया गया' कार्यक्रम का संचालन डॉक्टर वी त्रिपाठी , डॉक्टर विवेक महेश्वरी ,डॉ अमितेष यादव , डॉक्टर निधिका पाण्डे ने किया ' कार्यक्रम का संचालन करते हुए डॉ वी एन त्रिपाठी ने बताया कि दस्त होने पर सिर्फ ओ आर एस ही देना चाहिए , वा सफाई का विषेश ध्यान देना चाहिए ' कार्यक्रम में तुलसी हॉस्पिटल के एम डी, डी शेखर गुप्ता, डॉक्टर वा नर्सिंग स्टाफ मौजूद थे '

शिक्षा-मित्र श्रद्धांजलि सभा मे उमड़ा शिक्षा मित्रों का जन सैलाब

नवयुग समाचार

बहराइचः- आज जनपद बहराइच के श्रीभानी राम स्नेह भवन में जिले के शिक्षा मित्र इकठ्ठा होकर एक मृत शिक्षा मित्रों के आत्मा की शांति हेतु एक बृहद श्रद्धांजलि सभा का आयोजन जिला अध्यक्ष शिव श्याम मिश्रा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।श्रद्धांजलि सभा के उपरांत सैकड़ो शिक्षा मित्रों ने मोटर साइकिल की रैली निकालकर अपनी एकजुटता का परिचय देते हुए कुछ देर के लिए डी एम चौराहे पर जाम लगाकर सरकार विरोधी नारे लगाए।ततपश्चात जिलाधिकारी को मुख्यमंत्री के नाम संबोधित ज्ञापन दिया गया।पत्र के माध्यम से मुख्यमंत्री लखनऊ से अनुरोध किया गया कि पूर्व में शिक्षा मित्रों के प्रकरण में जो जांच कमेटी बनी थी उसके निर्णय को सार्वजनिक के शिक्षा मित्रों को अन्य प्रदेशों की भांति समान कार्य समान वेतन अथवा संतोषजनक वेतन दिया जाय जिससे प्रदेश के शिक्षा मित्र अपना व अपने परिवार का भरण पोषण,बच्चों की शिक्षा दीक्षा व पर्वो को सुखमय तरीके से मना सकें,तथा आत्म हत्या जैसे कठोर कदम न उठाना पड़े।

प्रमुख सचिव बेसिक शिक्षा के निर्देशन में निदेशक के अध्यक्षता में एक कमेटी का गठन 14 नवंबर 2023 में किया गया था उक्त कमेटी द्वारा भेजे गए प्रस्ताव को शीघ्र लागू करके वर्तमान में महंगाई को देखते हुए नियमिती करण करते हुए अन्य राज्यों जैसे राजस्थान उत्तराखंड हरियाणा बिहार जैसे राज्यों के समान शिक्षामित्रो को वेतन अथवा मानदेय दिया जाए मूल विद्यालय से वंचित शिक्षा मित्रों को पुनः मूल विद्यालय या उनकी ग्राम पंचायत के अन्य विद्यालय में समायोजित करने की अनुमति प्रदान करें महिला शिक्षामित्र को विवाहों उपरांत उनके ससुराल के जनपद में नई तैनाती दिया जाए ,शिक्षामित्र को ऐप योजना में शामिल किया जाए शिक्षामित्र को आयुष्मान योजना में शामिल करते हुए मेडिकल सुविधा प्रदान की जाए मृतक शिक्षामित्र के परिवार को आर्थिक सहायता देते हुए परिवार के एक सदस्य को समायोजित किया जाए उत्तर प्रदेश के समस्त शिक्षामित्र आपके आभारी रहेंगे ।इस अवसर पर वरिष्ठ उपाध्यक्ष अनिल सिंह,गिरीश चन्द्र जायसवाल,हरीश उर्फ पप्पू,जीत कुमार यादव,तृप्ति सिंह जिला महिला प्रभारी, राहुल पांडे,राजेश सिंह, रिजवान अली, दिनेश गौतम,प्रदीप अवस्थी,राम गोविंद यादव,अनुदेशक संघ के जिला अध्यक्ष अखिलेश यादव का भी सहयोग प्राप्त हुआ।शिक्षक संगठनों के जिला अध्यक्ष,जिला मंत्री,जिला कोषाध्यक्ष, आदि सम्मानित जनों का भी आशीर्वाद जिले के शिक्षा मित्रों को प्राप्त हुआ।

चिन्हित अभियोग में न्यायालय द्वारा सजा

नवयुग समाचार

बहराइच। पुलिस अधीक्षक वृन्दा शुक्ला के निर्देशन में जनपद में चलाये जा रहे ऑपरेशन कन्विक्शन के सम्बन्ध में दिये गये निर्देश के क्रम में अपर पुलिस अधीक्षक (नगर) एवं क्षेत्राधिकारी नगर के निर्देशन में थाना फखरपुर से सम्बन्धित ठउढर अउळ से सम्बन्धित अभियुक्त शुभम शुक्ला पुत्र रामकुमार शुक्ला निवासी मुसेपट्टी दाखिला कदियापुर थाना बौण्डी को दिनांक 12.07.2023 को समय 13.32 बजे बहद स्थान कदियापुर मोड़ दाखिला माधवपुर थाना फखरपुर पुलिस द्वारा अभियुक्त को पकड़ा गया अभियुक्त के कब्जे से 1 किलो 100 ग्राम नाजायज गांजा बरामद किया गया जिसको रखने का उसके पास कोई वैध प्रपत्र नहीं था। अभियुक्त को पुलिस हिरासत में लेकर दिनांक 12.07.2023 को थाना स्थानीय पर मु0अ0सं0 290/2023 धारा 8/20 ठउढर अउळ बनाम शुभम शुक्ला पुत्र रामकुमार शुक्ला निवासी मुसेपट्टी दाखिला कदियापुर थाना बौण्डी जनपद बहराइच के विरुद्ध पंजीकृत कराया गया था । विवेचना के उपरांत आरोप पत्र 09.11.2023 को माननीय न्यायालय प्रेषित किया गया था । उक्त अभियोग की प्रभारी थाना फखरपुर, थाना पैरोकार आरक्षी अमरेन्द्र कुमार यादव, कोर्ट मोहर्रिर महिला आरक्षी श्वेता यादव व विशेष लोक अभियोजक प्रेम प्रकाश मिश्रा द्वारा ह्लआपरेशन कन्विक्शनह्व के आदेश के क्रम में प्रभावी पैरवी की गयी, जिसमें आज दिनांक 25.07.2024 को माननीय न्यायालय ए0एस0जे0 चतुर्थ/एनडीपीएस एक्ट, बहराइच द्वारा अभियुक्त उपरोक्त को दोषसिद्ध पाये जाने पर धारा 8/20 ठउढर अउळ के अन्तर्गत 01 वर्ष का कठोर कारावास व 10,000 /- रुपये के अर्थदण्ड से दण्डित किया गया, अर्थदण्ड न अदा करने की स्थिति में 20 दिवस का अतिरिक्त साधारण कारावास से दण्डित किया गया ।

अग्निकांड से पीड़ित किसानों को प्रदान किए गए सहायता राशि स्वरूप चेक

नवयुग समाचार

अलीगंज। खेतों में हुए अग्निकांड से पीड़ित किसानों को मुख्यमंत्री खेत खलिहान अग्निकांड दुर्घटना सहायता योजना के अंतर्गत अलीगंज विधायक व एसडीएम ने मुआवजा के रूप में चेक का वितरण किया। गुरुवार को उप जिलाधिकारी कार्यालय में विधायक अलीगंज सत्यपाल सिंह राठौड़ ने क्षेत्र में पिछले दिनों विभिन्न कारणों से खेतों में आग लगने से नष्ट हुई गेहूं की फसल के मामले में 5 पीड़ित किसानों

चेक पाकर खिल उठे किसानों के चेहरे

को मुख्यमंत्री खेत खलिहान अग्निकांड दुर्घटना सहायता योजना के अंतर्गत करीब एक लाख 42 हजार रुपये धनराशि के चेक बतौर मुआवजा के रूप में प्रदान किए। मुआवजा लेने वालों में किसान गोसलपुर निवासी महावीर सिंह पुत्र गोकरन सिंह, दहेलिया निवासी दुधावती पत्नी लक्ष्मी नारायण और मोकमपुर निवासी रामपाल पुत्र गीतम सिंह को 30-30 हजार रुपए के चेक प्रदान किए गए साथी ही नगला सामंत निवासी राजेंद्र सिंह पुत्र मुंशी सिंह और रमेश सिंह पुत्र मुंशी सिंह को 26-26 हजार के चेक प्रदान किए गए। इस मौके पर विधायक सत्यपाल सिंह राठौड़ ने कहा कि वर्तमान में केंद्र व प्रदेश में भाजपा सरकार किसान हितैषी है। पूर्व की सरकार में जहां किसानों को नुकसान होने के बाद भी मुआवजा नहीं मिल पाता था। आज इस सरकार में पीड़ितों की हर संभव मदद की जा रही है।

एडीएम ने एआरटीओ कार्यालय पर मारा छापा, अनुपस्थित कर्मचारियों का रोका वेतन

एआरटीओ कार्यालय में कार्यरत मिला संदिग्ध व्यक्ति, एआरटीओ, आरआई का रोका गया वेतन

दिलीप सिंह

नवयुग समाचार

एटा। जिलाधिकारी प्रेम रंजन सिंह के निर्देश पर अपर जिलाधिकारी (प्रशासन) सत्य प्रकाश ने अपर उप जिला मजिस्ट्रेट वेद प्रिय आर्य, डिप्टी कलेक्टर विमल कुमार के साथ संयुक्त रूप से कार्यालय सहायक सम्भागीय परिवहन अधिकारी, चकबन्दी कार्यालय एवं कार्यालय नगर पालिका परिषद का औचक निरीक्षण किया गया।

एडीएम प्रशासन ने सर्वप्रथम सहायक सम्भागीय परिवहन अधिकारी कार्यालय के निरीक्षण में पाया कि कार्यालय में सहायक सम्भागीय परिवहन अधिकारी सत्येन्द्र कुमार एवं सम्भागीय निरीक्षक अजय कुमार गुप्ता अनुपस्थित पाए गए। कार्यालय में बताया गया कि एआरटीओ

ताज ट्रेपेजियम जोन प्रदूषण की बैठक हेतु आगरा गए हुए हैं, जबकि यह बैठक आगरा में शाम 4 बजे है। एडीएम प्रशासन को बताया गया कि सम्भागीय निरीक्षक अजय कुमार गुप्ता चैकिंग पर गये हुए हैं, जबकि भ्रमण पंजिका मांगे जाने पर उपलब्ध नहीं करायी गयी। कार्यालय के वरिष्ठ सहायक अरविन्द कुमार अनुपस्थित मिले। कार्यालय में एक संदिग्ध व्यक्ति धीरज बघेल पुत्र वासुदेव निवासी ग्राम चिलासनी कार्य करता पाया गया, जिसके ब्यान लिए गए हैं। कार्यालय में अनुपस्थित रहने पर एआरटीओ सत्येन्द्र कुमार एवं अजय कुमार गुप्ता सम्भागीय निरीक्षक को स्पष्टीकरण निर्गत कर वेतन आहरण अग्रिम आदेशों तक के लिए रोक दिया गया है। एडीएम ने चकबन्दी कार्यालय कलेक्ट्रेट का भी निरीक्षण किया, निरीक्षण के समय चकबन्दी कार्यालय के समस्त कर्मचारी कार्यालय में उपस्थित मिले। कार्यालय में पत्रावलियां का रख-रखाव सही नहीं पाया गया। कार्यालय में साफ-सफाई एवं पत्रावलियों के व्यवस्थित रख-रखाव हेतु निर्देशित किया गया। एडीएम ने कार्यालय नगर पालिका परिषद एटा का औचक निरीक्षण किया, निरीक्षण के समय न०पा०परिषद कार्यालय में एक कर्मचारी विनय पाठक अनुपस्थित मिले। इनके द्वारा अनुपस्थिति के सम्बन्ध में कोई सूचना कार्यालय को नहीं दी गयी। इनका स्पष्टीकरण निर्गत कर वेतन आहरण अग्रिम आदेशों तक रोक दिया गया है। कार्यालय में साफ-सफाई का अभाव पाया गया। अधिशासी अधिकारी, नगर पालिका परिषद एटा को कार्यालय की साफ-सफाई एवं पर्याप्त प्रकाश व्यवस्था कराने हेतु निर्देशित किया गया।

पारिवारिक कलह से परेशान महिला ने पांच साल के बच्चे को फंदे से लटकाने के खुद भी आत्महत्या की

मोहम्मद इरफान खान

उन्नाव जिले के अजगैन कोतवाली क्षेत्र में पारिवारिक कलह से परेशान महिला ने पांच साल के बच्चे को फंदे से लटकाने के खुद भी आत्महत्या कर ली। मृतका के मायके वालों ने ससुरालीजनों पर हत्या का आरोप लगाया है। घटना से इलाके में हड़कंप मच गया है। अजगैन कोतवाली के मलांव गांव निवासी देशराज की पत्नी शांति (30) ने गुरुवार सुबह करीब छह बजे पारिवारिक कलह में पहले बेटे देवराज (5) को फंदे

पर लटका कर मार डाला। फिर खुद साड़ी के फंदे से लटककर आत्महत्या कर ली। पति देशराज साड़ी के दोनों छोर में पहले बच्चे और फिर पत्नी का शव लटका देख बेहाल हो गया। सूचना पर पहुंची पुलिस ने जांच पड़ताल शुरू की है। पुलिस को देशराज ने बताया कि पहले वह मुंबई में रहकर मजदूरी करता था। पांच महीने पहले वह घर आ गया था। पति-पत्नी में अक्सर होता था विवाद तब से यहीं मजदूरी कर पालन पोषण करता था। मोहल्लेवासियों के मुताबिक, शांति का अक्सर सास गुड्डी की सेवा न करने पर पति से विवाद होता था। देशराज तीन भाई है। सब अलग-अलग रहते हैं। मां के साथ पत्नी का व्यवहार देख देशराज अक्सर पत्नी को पीटता था। मायके वालों ने ससुरालियों पर हत्या का आरोप लगाया

इससे दोनों में जमकर विवाद होता था। पुलिस ने पति और मोहल्ले वालों के बयान दर्ज किए हैं। सूचना पर दही थानाक्षेत्र के शिवदीनखेड़ा निवासी मृतका के मायके वालों ने ससुरालियों पर हत्या का आरोप लगा हंगामा किया।

शव पोस्टमार्टम के लिए भेजे कोतवाल ने परिजनों को पोस्टमार्टम रिपोर्ट के आधार पर आगे की कार्रवाई का शासन दिया, तब परिजन शांत हुए। कोतवाल अवनीश सिंह ने बताया कि पारिवारिक विवाद में मां ने बेटे को फंदे से लटकाने के बाद खुद भी आत्महत्या की है। पोस्टमार्टम रिपोर्ट कराया जा रहा है

हत्या के प्रयास एवं सरकारी कार्य में बाधा डालने वाले 05 उपद्रवी गिरफ्तार

मोहम्मद इरफान खान

उन्नाव।पुलिस अधीक्षक जनपद उन्नाव के कुशल निर्देशन एवं अपर पुलिस अधीक्षक दक्षिणी तथा क्षेत्राधिकारी बांगरमऊ के कुशल पर्यवेक्षण में अपराध एवं अपराधियों के विरूद्ध चलाये जा रहे अभियान के क्रम में थाना बांगरमऊ पुलिस द्वारा हत्या के प्रयास एवं सरकारी कार्य में बाधा डालने वाले 05 अभियुक्तों को गिरफ्तार किया गया।

दिनांक 22.07.2024 को थाना बांगरमऊ के ग्राम मऊ में दो पक्षों के मध्य हुए विवाद के संदर्भ में थाना बांगरमऊ पर मु0अ0सं0 263/

24 धारा 191(2)/191(3)/ 115(2)/121(1)/132/352/ 351(2) इठर व 7 उछअ अउळ व मु0अ0सं0 मु0अ0सं0 264/24 धारा 191(2)/191(3)/190/ 109(1)/ 324श/118(1)/110/ 115(2)/352/74/333/351(3) इठर पंजीकृत किया गया था। आज दिनांक को थाना बांगरमऊ पुलिस द्वारा उरोक्त अभियोग से संबन्धित अभियुक्तगण 1. सोएब अली पुत्र रफिदाद अली 2. पप्पू उर्फ मतलूब पुत्र एतमाद अली 3. इमरान पुत्र इसरार 4. समीर अली पुत्र इरफान अली निवासीगण ग्राम मऊ थाना बांगरमऊ जनपद उन्नाव 5. तौसीब पुत्र मंजूर निवासी ग्राम भटियापुर थाना बांगरमऊ जनपद उन्नाव को आगरा लखनऊ एक्सप्रेस वे के नीचे अण्डपास से गिरफ्तार किया गया ।

विधायक पुत्र की इस नेक दिल पहल से लोगो द्वारा की जा रही तारीफ

मोहम्मद इरफान खान

उन्नाव। बांगरमऊ ई रिक्शा चालक को तेज गति के ट्रक ने टक्कर मार दी जिसे गंभीर हालत में बांगरमऊ अस्पताल से ट्रामा सेंटर लखनऊ भेज दिया गया। बांगरमऊ के गांव ख्वाजगीपुर हेम्मा निवासी अमित पुत्र नन्हेलाल 27 वर्ष ई रिक्शा चालक के रूप में कार्य करता है इसी क्रम में गुरुवार को शाम पहर वह सवारी छोड़कर बांगरमऊ की तरफ जा रहा था तभी बांगरमऊ बिल्हौर मार्ग पर गांव जमुनिहा बंगर के निकट उसे एक तेज गति के ट्रक ने जोरदार टक्कर मार दी जिससे ई रिक्शा पलटने से वह बुरी तरह जख्मी हो गया इसी दौरान घटना के समय उधर से गुजर रहे बांगरमऊ विधायक पुत्र अंशुल कटियार ने घायल अवस्था में अमित को देखकर सरकारी एंबुलेंस बुलाकर बांगरमऊ अस्पताल में भर्ती कराया गया जहां से प्राथमिक उपचार के बाद उन्हे ट्रामा सेंटर लखनऊ के लिए रेफर कर दिया गया। विधायक पुत्र की इस नेक दिल पहल से लोगो द्वारा उनकी तारीफ की जाती रही।

भारतीय शक्ति चेतना पार्टी पन्ना के महासचिव गजेन्द्र साहू ने दमोह अस्पताल में किया रक्तदान

ब्यूरो चीफ हिमांशु सिंह राजपूत/ नवयुग समाचार दमोह

दमोह/मध्य प्रदेश

परमहंस योगीराज श्री शक्तिपुत्र जी महाराज की दिशा निर्देशन में भगवती मानव कल्याण संगठन व भारतीय शक्ति चेतना पार्टी के संयुक्त तत्वावधान में अब तक सागर संभाग में 2500 से अधिक कार्यकर्ताओं ने जरूरतमंद लोगों को निशुल्क रक्तदान किया है उसी कड़ी में आज भारतीय शक्ति चेतना पार्टी के महासचिव गजेन्द्र साहू ने

कुम्हारी जिला दमोह की वर्षा प्रजापति को निशुल्क रक्तदान किया। दो बच्चियों को सर्प काटने से जिला अस्पताल में भर्ती थी एक मौत हो गई है दूसरी का इलाज चल रहा है । संगठन मंत्री दमोह महेश गुप्ता ने जैसे ही सम्पर्क किया तुरन्त दमोह जाके समाजसेवी गजेन्द्र साहू ने रक्तदान किया